ये अव्यक्त इशारे

अपवित्रता के बीज को भी समाप्त कर सम्पूर्ण स्वच्छ (पवित्र) बनो

18-08-2026

ईश्वरीय सेवा का बड़े से बड़ा पण्य है – पवित्रता का दान देना। पवित्र बनना और बनाना ही पुण्य आत्मा बनना है क्योंकि किसी आत्मा को आत्मघात महा पाप से छुड़ाते हो। अपवित्रता आत्मघात है। पवित्रता जीयदान है।

Finish the seed of impurity and become completely clean (pure).

The greatest charity of Godly service is the donation of purity. For you to become pure and make others pure is to become a charitable soul, because you are liberating a soul from the great sin of committing suicide. Impurity is suicide of the soul and purity is the donation of life.